ओ.आर.सी.-भोड़ाकलाँ(गुरूग्राम)। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर भव्य आयोजन में श्रीकृष्ण की अद्भुत झाँकियों की झलक पाने के लिए उमड़ी श्रद्धालुओं की भीड़। कार्यक्रम में शरीक हुए स्थानीय जिला पार्षद सुशील चौहान एवं भोड़ाकला के सरपंच यजवेन्द्र शर्मा। इस अवसर पर पूरा ही परिसर बिजली की जगमगाहट से रोशन, नैसर्गिक एवं अलौकिक प्रतीत हो रहा था। झाँकी का उद्घाटन ब्र.कु. आशा दीदी, ब्र.कु. बृजमोहन तथा गणमान्य लोगों ने किया।

समझें दीपावली का मर्म

आज हम दीपावली को अच्छी तरह से मनाते हैं, उसके लिए तैयारियाँ भी खूब करते हैं। तैयारियों के साथ-साथ अपना उमंग-उत्साह बढ़ाने के लिए अलग-अलग तरह के मिष्ठान बनाना, बाँटना, एक दूसरे को भेंट देना आदि आदि कार्यक्रम पुरज़ोर तरीके से चलता है। इसमें हम सब बड़ी खुशी से शामिल होते और करते भी हैं, फिर भी कहीं न कहीं इसके साथ न्याय अभी तक पूर्ण रूप से नहीं हो पाया है। तो आज हम इसके साथ न्याय कैसे हो, उसपर चर्चा करेंगे...

दीपावली दीपमाला या अंधकार से प्रकाश की ओर जाना या विजय उत्सव या बुराई पर अच्छाई की जीत का प्रतीक है। कहा जाता है कि जब रामचन्द्र जी रावण पर विजय प्राप्त कर अयोध्या लौटे तो पूरे अयोध्या नगर को दीपों से सजा दिया गया। तभी से इस त्योहार को मनाया जाता है। साथ ही यह भी मान्यता है कि घोर अमावस्या पर श्रीलक्ष्मी का आगमन तब होता है जब हम दीपक जलाकर उनका आह्वान करते हैं, और धन हमारे घर में बरसता है। ये मान्यतायें शुरू से चली आ रही हैं और आप भी इसमें शामिल हैं। लेकिन इन मान्यताओं को हम परिणाम के आधार से ही मानते हैं। लेकिन कोई भी परिणाम किसी कार्य से शुरू हुआ होगा ना, तब जाकर उसका परिणाम निकलकर आता है। अगर दीपक ही जगाना होता तो हम किसी भी समय जगा देते, लेकिन एक विशेष लक्ष्य को लेकर इन त्योहारों का मनाना होता है। इसमें कुछ आध्यात्मिक रहस्यों को लेकर ही ये त्योहार आगे बढ़ते हैं।

अब दीपावली आने वाली है, कुछ दिन में सबलोग अपने घरों की सफाई करेंगे, रंगाई-पुताई करेंगे, क्योंकि उनको विश्वास है कि सफाई से घर में लक्ष्मी आती है। क्या आपको ऐसा लगता है? अगर इंसान मन से बहुत गंदा हो, और घर को साफ-सुथरा रखे तो उस घर में आपका रहने का मन करेगा? घर तो बहुतों के बहुत साफ होते हैं, बहुत सारे नौकर-चाकर लगे होते हैं, लेकिन उनके घर में घुसते ही वहाँ का वायब्रेशन हमें तंग कर देता है। कारण, कि अंदर जबतक हमारा मन ठीक नहीं होगा, तो घर के वायब्रेशन में भी वही सारी चीज़ें होंगी। तो लक्ष्मी, जो धन की प्रतीक हैं वो उनके वहाँ निवास करती हैं जिनका मन साफ हो। अगर किसी के पास धन इकट्ठा हो भी गया है, क्योंकि आप इसको उल्टा भी लेते हैं, कि ऐसा नहीं है कि धन उसके पास होता है जिसका मन अच्छा है, लेकिन आज धन उनके पास ज़्यादा है जिनका मन अच्छा नहीं है, निश्चित ही उनके पास धन ज़्यादा होगा लेकिन वो धन को लेकर खुश नहीं होगा, हमेशा किसी न किसी बात से परेशान रहेगा, क्योंकि वो गलत तरीके से आया हुआ है। इसलिए हमें अपने मन के घर को अच्छी तरह से देखना है। उसके कोने-कोने में जाकर बुराई, ईर्ष्या, नफरत रूपी जाले को अच्छी तरह से निकालकर, फिर उसको गुणों आदि से रंगाई-पुताई कर उसको ठीक करना है ताकि एक छोटा सा दाग भी ना रहे। आपने देखा होगा कि जब दीपक जलता है, अगर उसमें छोटा सा भी कीड़ा गिर जाए, या कोई ऐसी चीज़ फँस जाये बाती के साथ तो वो दीपक बुझ जाता है। वैसे ही अगर थोड़ी भी हमारे अंदर उलझन होगी, मन में तकलीफ होगी, किसी की बात को लेकर उलझन होगी तो उस आत्मा की लौ अर्थात उमंग-उत्साह, उसका प्रकाश अर्थात उसका वायब्रेशन किसी को प्रभावित नहीं करेगा। उसके पास कोई बैठेगा नहीं, उसके पास कुछ टिकेगा नहीं। चाहे धन हो, चाहे सम्बंध हो, सभी उससे दूर भागेंगे। इसीलिए दीपावली पर्व को अंधकार पर प्रकाश के विजय का प्रतीक माना जाता है। अर्थात् मन में किसी भी तरह का अंधकार जो हमारी लौ को धीमा कर रहा हो, उलझा रहा हो, वो हमारे प्रकाश को फैलने नहीं देगा। हम सिमट कर रह जाते हैं। आज आध्यात्मिक होने के बावजूद भी बहुत सारी आत्मायें ईर्ष्या द्वेष से भरी हुई होती हैं। वो अपने प्रकाश को निरंतर धुमिल करती रहती हैं। दीपावली अपने आप में सभी आत्माओं की सम्पूर्ण जागृति का त्योहार है। अगर हम थोड़ा भी किसी बात को लेकर तंग होते हैं, तो परमात्मा कहते कि तुम्हारी आत्मा की ज्योति कम हो रही है। है कि नहीं ऐसा? संसार एक रंगमंच है, और उस रंगमंच पर सभी आत्मायें अपने-अपने प्रकाश के हिसाब से सभी को अपनी ओर आकर्षित कर रही हैं। तभी तो संसार में हर एक अपने-अपने दायरे के हिसाब से अपने सम्बन्धों के साथ न्याय कर रहा है। जीवनदान सभी को देने के लिए हमें अपने प्रकाश पर निरंतर ध्यान रखना है, उसमें योग अर्थात् परमात्मा से जुड़ाव का घी डालते जाना है, जिससे हम उस प्रकाश को अगर किसी को दें तो उसका दीपक जल जाये, जो हर एक आत्मा की मूलभूत आवश्यकता है। आप सोचिये ज़रा अगर हर एक आत्मा अपने प्रकाश को बढ़ा ले तो कितनी सुंदर दीप माला बन जायेगी। वो जहाँ खड़े होंगे, उससे कितनी आत्माओं का जीवन बदल जायेगा। तब जाकर दीपावली के साथ सच्चा न्याय होगा।

जीवन में हर दिन हो दिवाली, ध्यान रखें यह बातें...

- रोज़ सुबह अमृतवेले विशेष रूप से चार बजे उठकर अपने बारे में कुछ अच्छी बातें लिखें। सोचे नहीं लिखें। लिखना बहुत ज़रूरी है।
- जो चीज़ लिखा, उसको लगातार चालीस दिन अभ्यास में लायें, जैसे मैं अच्छा हूँ, मैं सबके लिए शुभ सोचता हूँ,
- किसी के प्रति कोई बुरा भाव नहीं है, मेरा जीवन सुलझा हुआ है, मैं सबका जीवन सुलझाने वाला हूँ।
- कुछ भी अब मुझे नहीं सोच लेना है, बस कुछ श्रेष्ठ सोचना है और श्रेष्ठ करना है, इसलिए बहुत बहुत बहुत ध्यान रखना है। यहाँ ये शब्द इतनी बार इसलिए हम दोहरा रहे हैं कि ध्यान अर्थात् अटेंशन ही हमारी आत्मा की ज्योति को हमेशा प्रकाशित होने में मदद करेगा। हमारा अटेंशन जैसे ही खत्म होता है, हम सबकुछ वैसे ही करने चले जाते हैं।
- दीपावली के दिन सुबह सुबह लोग दरिद्रता को भगाने के लिए सूप बजाते हैं, अर्थात् अटेंशन दिलाते हैं कि अब मैं सुधर चुका हूँ, मेरे अंदर ज्ञान धन आ चुका है। अब तुम यहाँ भटको नहीं, जाओ हमेशा के लिए, ना कि एक साल के लिए। यदि हम ऐसे कुछ प्रयोग अभी से करना शुरू कर दें तो सच्ची दीपावली मनाने में हम सफल होंगे ही।

कोलकाता-प.बंगाल। राज्यपाल महोदय केशरी नाथ त्रिपाठी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. कानन। साथ हैं ब्र.कु. सिंह भाई, ब्र.कु. अंजली तथा अर्चना तिवारी।

राँची-झारखण्ड। राज्यपाल महोदया द्रौपदी मुर्मू को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. निर्मला।

दिल्ली-वसंत विहार। पूर्व लेफ्टिनेंट गवर्नर तेजेन्द्र खन्ना को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. क्षीरा।

सोडाला-राज.। राष्ट्रीय मुस्लिम मंच पर आर.एस.एस. लीडर इन्द्रेश कुमार को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. स्नेह।

नालागढ़-हि.प्र.। के.सी.एल. लि. कम्पनी के जी.एम. योगेश जैन को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. राधा। साथ हैं ब्र.कु. अनीता तथा अन्य।

दरभंगा-बिहार। प्रसिद्ध गायिका शारदा सिन्हा को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. रानी दीदी। साथ हैं ब्र.कु. आरती।